Bayanate Gause Aazam (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 373
Weekly Booklet : 373

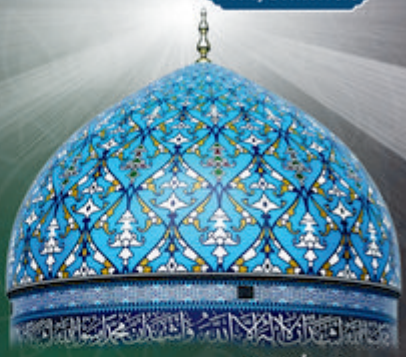

बयानाते ग़ौसे आ'ज़म

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

(मअ इफ़ादाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

(सफ़हात 47)

तीन अहम बातें	03
शहद नुमा ज़हर	17
दुन्या व आख़िरत की मिसाल	31
हर मुश्किल के बा'द आसानी है	46

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बयानाते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه(1)

(मअ़ इफ़ादाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 47 सफ़ह़ात का रिसाला : "**बयानाते ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले उसे अपना वली बना और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमा । اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा । तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।

(ترمذی،4/207،حدیث:2465)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नेक लोगों के ज़िक्र की शान

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ या'नी "नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत उतरती है ।"

(حلیۃ الاولیاء،7/335،رقم:10750)

---

(1)... रबीउ़ल आख़िर 1445 हिजरी मुत़ाबिक़ अक्तूबर 2023 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ग्यारहवीं शरीफ़ के मदनी मुज़ाकरों से क़ब्ल होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 11 बयानात का तह़रीरी गुलदस्ता (कुछ ज़रूरी तरामीम के साथ) ।

जब **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है तो **अल्लाह** पाक के औलिया के ज़िक्र के वक़्त कैसी रह़मतें नाज़िल होंगी और जब वलियों के सरदार, शहन्शाहे बग़दाद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की प्यारी प्यारी बातें होंगी फिर तो कैसी झूम झूम कर रह़मतों और अन्वारो तजल्लियात की बरसात होगी। **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों ख़ुसूसन मेरे पीरो मुर्शिद, हुज़ूर ग़ौसे पाक सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का ज़िक्रे ख़ैर होता रहेगा। اِنۡ شَآءَاللّٰہ

15 साल तक रोज़ाना नमाज़ में ख़त्मे क़ुरआन

मेरे मुर्शिद सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ तह़दीसे ने'मत (या'नी अपने रब की नेमतें ज़ाहिर करते हुए) और अपने ग़ुलामों की नसीह़त के लिये फ़रमाते हैं :

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ ! मैं 25 साल तक इ़राक़ के वीरानों में फिरता रहा और चालीस साल तक इ़शा की नमाज़ के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की। पन्दरह साल तक रोज़ाना बा'द नमाज़े इ़शा नवाफ़िल में एक क़ुरआने करीम ख़त्म करता रहा। शुरूआ़त में अपने बदन पर रस्सी बांध कर उस का दूसरा सिरा दीवार में गड़ी हुई खूंटी से बांध दिया करता था ताकि अगर नींद का ग़लबा हो तो उस के झटके से आंख खुल जाए। (بہجۃ الاسرار، ص118 ملخصاً)

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक रात जब मैं ने अपनी इ़बादतों का सिल्सिला शुरूअ़ करना चाहा तो नफ़्स ने सुस्ती करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इ़बादत बजा लाने का मश्वरा दिया, जिस जगह दिल में येह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक़्त एक क़दम पर खड़े हो कर मैं ने एक क़ुरआने करीम ख़त्म किया। (सांप नुमा जिन्न, स. 15)

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की महब्बत का दम भरने वालो ! मेरे मुर्शिद के बारे में अभी आप ने पढ़ा कि कैसी इ़बादतें करते थे और नफ़्स की त़रफ़ से वस्वसा आया तो उसे कैसी अनोखी सज़ा दी । सरकारे बग़दाद हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ तो इस क़दर इ़बादत करते थे और हम उन के मानने वाले अगर पांच वक़्त की नमाज़ भी न पढ़ पाएं तो हम किस क़िस्म के आ़शिक़ाने ग़ौसुल आ'ज़म हैं ? ख़ूब मक़ामे ग़ौर है ।

याद रखें ! अगर हम नफ़्सो शैत़ान की थोड़ी ख़्वाहिशात मानेंगे तो येह हम से अपनी सारी ख़्वाहिशात मनवाएंगे मसलन नमाज़े फ़ज्र के लिये किसी की आंख खुली, उस ने येह सोचा कि अभी तो अज़ान हो रही है या जमाअ़त में काफ़ी वक़्त है लिहाज़ा मज़ीद थोड़ी देर सो जाता हूं और वोह सो गया तो कई मरतबा ऐसा होता है कि जमाअ़त निकल जाती है। नीज़ (येह मस्अला भी याद रहे कि) अगर रात देर से सोने की वज्ह से नमाज़े फ़ज्र के लिये आंख नहीं खुलती और न कोई जगाने वाला मौजूद है तो ज़रूरी है कि जल्दी सोएं कि फ़ुक़हाए किराम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم फ़रमाते हैं : "जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शर्इ़य्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है ।" (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 92, ردالمحتار، 2/33)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तीन अहम बातें

आइये ! हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पुर असर बयानात से कुछ मदनी फूल ह़ासिल करते हैं चुनान्चे आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अपनी किताब "फ़ुतूहु़ल ग़ैब" सफ़्ह़ा नम्बर 17 पर लिखते हैं : मुसल्मान के लिये हर ह़ालत में तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : ﴾1﴿ **अल्लाह** पाक के हु़क्म पर अ़मल करना ﴾2﴿ उस की

मन्अ़ की हुई बातों से बचना और ﴿3﴾ **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना। मेरे मुर्शिद फ़रमाते हैं : एक मुसल्मान की कम से कम येह ह़ालत होनी चाहिये कि इन तीन चीज़ों से किसी ह़ाल में ख़ाली न हो। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 17) या'नी येह तीनों चीज़ें उस में मौजूद होनी चाहिएं।

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! ज़रा सोचें ! क्या हम इस फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर अ़मल करते हैं ? यक़ीनन नमाज़, ज़कात, ह़ज व रोज़ा मुसल्मानों पर मुख़्तलिफ़ शराइत़ के साथ फ़र्ज़ हैं, क्या हम **अल्लाह** पाक के इन अह़कामात पर अ़मल करते हैं ? नानाए ग़ौसे आ'ज़म, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : ﴿1﴾ इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं और ﴿2﴾ नमाज़ क़ाइम करना ﴿3﴾ ज़कात देना ﴿4﴾ ह़ज करना और ﴿5﴾ रमज़ान के रोज़े रखना। (بخاری، 1/14، حدیث:8) एक और ह़दीसे पाक में है कि **अल्लाह** पाक को येह पसन्द है कि उस के अ़त़ा कर्दा फ़राइज़ पर अ़मल किया जाए।

(ابن حبان، 5/231، حدیث:3560 ملتقطاً)

नमाज़ो रोज़ा व ह़ज्जो ज़कात की तौफ़ीक़ अ़त़ा हो उम्मते मह़बूब को सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

औलियाए किराम शरीअ़त के पाबन्द होते हैं

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारे मुर्शिद हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमाने आ़ली का दूसरा ह़िस्सा है : "**अल्लाह** पाक के मन्अ़ किये हुए कामों से बचना।" काश ! हमें इस पर भी अ़मल नसीब हो जाए। **अल्लाह** करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक के वली नमाज़ी हैं जो **अल्लाह** पाक की फ़र्ज़ कर्दा पांचों नमाज़ें पढ़ते और सवाब के लिये रमज़ान के रोज़े रखते हैं और ब ख़ुशी सवाब के लिये ज़कात अदा करते हैं और **अल्लाह** पाक के मन्अ़ किये हुए कबीरा (या'नी बड़े) गुनाहों से बचते हैं।" (معجم کبیر، 17/48، حدیث:101ملتقطاً) "कश्फ़ुल असरार" में येह ह़दीसे पाक बयान की गई है कि "**अल्लाह** पाक" की मन्अ़ की हुई चीज़ों में से ज़र्रा भर से बाज़ रहना या'नी बचना जिन्नो इन्स की इबादत से अफ़्ज़ल है। (کشف الاسرار، 1/154)

हज़ार रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी न करना अफ़्ज़ल है। ऐसे ही एक बार ग़ीबत से बच जाना जिन्नो इन्स की इबादत से बेहतर है। गुनाह से बचने की बहुत अहम्मिय्यत है। क्यूं कि ज़रर को नफ़्अ़ पर तरजीह़ होती है या'नी नफ़्अ़ ह़ासिल करना बेशक दुरुस्त लेकिन ज़रर से बच जाना येह ज़ियादा अहम होता है, इस लिये इन्सान हरगिज़ गुनाह न करे और नेकियां करता रहे, इसे भी न छोड़े।

ज़बान में तासीर पैदा करने का अ़मल

ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने रब्बे करीम के हुक्म को पूरा करे, उस की मन्अ़ की हुई चीज़ों से बचे और नेक आ'माल अपना कर (लोगों को) **अल्लाह** पाक की त़रफ़ बुलाए (या'नी नेकी की दा'वत दे) तो उस की बात मानी जाएगी और उस का कहा दिलों में असर भी करेगा। (تفسیر صاوی، 5/1851)

जिसे नेकी की दा'वत दूं उसे दे दे हिदायत तू
ज़बां में दे असर कर दे अ़त़ा ज़ोरे क़लम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नसीह़ते ग़ौसे आ'ज़म पर अ़मल की बरकात

मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तू **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार और उस के हुक्म पर अ़मल करने वाला, उस के मन्अ़ किये हुए कामों से बचने वाला और उस की तक़्दीर (या'नी उस ने जो कुछ तेरे लिये तै किया है उस) को तस्लीम करने वाला होगा तो वोह तुझे शर से बचाएगा और तुझ पर अपनी ख़ैर (या'नी भलाई) ज़ियादा करेगा। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 238 मुलख़्ख़सन)

सुब्ह़ो शाम इबादत करो

एक और मक़ाम पर मेरे मुर्शिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी सुब्ह़ो शाम करते रहो, जब तुम ऐसा करोगे तो इ़ज़्ज़तो करामत (या'नी बुज़ुर्गी) का ताज तुम्हारे सर पर होगा। (الفتح الربانی، ص51)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सख़्तियां दूर हो गईं

ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "त़बक़ाते कुब्रा" में हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह इर्शादे पाक लिखते हैं कि शुरूअ़ शुरूअ़ में मुझ पर बहुत आज़्माइशें, तक्लीफ़ें आईं, जब वोह बहुत ज़ियादा हो गईं तो मैं बेबस हो कर ज़मीन पर लैट गया और मेरी ज़बान पर कुरआने पाक की येह दो आयाते मुबारका जारी हो गईं : ﴿فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًاۙ۝۵ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًاؕ۝۶﴾ (پ30، الم نشرح:5،6) **आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :**(1) "तो बेशक दुश्वारी के साथ

---

(1)... इस रिसाले में शामिल तमाम कुरआनी आयात का तरजमा "कन्ज़ुल इरफ़ान" से लिया गया है।

www.dawateislami.net

आसानी है। बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।" या'नी मुश्किल के साथ आसानी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इन आयात की बरकत से मेरी तमाम मुश्किलें आसान हो गईं। (طبقات کبریٰ للشعرانی، 178/1 ملخصًا, सांप नुमा जिन्न, स. 9)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

4 फ़रामीने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

﴾1﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा

मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! तू **अल्लाह** करीम से बे ख़ौफ़ न हो बल्कि ख़ौफ़[1] को लाज़िम पकड़ ले, अगर **अल्लाह** पाक जन्नत और जहन्नम को पैदा न फ़रमाता तब भी उस की ज़ात इस बात की मुस्तह़िक़ थी कि उस से ख़ौफ़ किया जाए और उसी से उम्मीद रखी जाए। उस की फ़रमां बरदारी कर, उस के हुक्म पर अ़मल कर और उस के मन्अ़ किये हुए कामों से बच, तू उस की बारगाह में तौबा कर और उस के सामने ख़ूब ख़ूब आ़जिज़ी और गिर्या व ज़ारी कर और जब तू सच्चे दिल से तौबा करेगा और इस्तिक़ामत के साथ नेकियां करता रहेगा तो **अल्लाह** करीम तुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाएगा।

(الفتح الربانی، ص75 ملخصًا)

तू डर अपना इ़नायत कर, रहें इस डर से आंखें तर मिटा ख़ौफ़े जहां दिल से, मिटा दुन्या का ग़म मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

1... ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब येह है कि **अल्लाह** पाक की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए। (ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14, ماخوذاً از احیاء العلوم، 190/4)

﴾2﴿ अल्लाह पाक की ना फ़रमानियों से बचो !

(ऐ नादान इन्सान !) ज़रा ग़ौर कर ! जब इस फ़ना होने वाली दुन्या का हुसूल बिग़ैर मेहनतो मशक़्क़त के मुम्किन नहीं है (या'नी दुन्या की ख़त्म हो जाने वाली ने'मतों के लिये मेहनत करनी पड़ती है) तो वोह चीज़ जो **अल्लाह** करीम के पास है (और हमेशा बाक़ी रहने वाली है) उस का बिग़ैर रियाज़तो मेहनत के मिलना किस त़रह़ मुम्किन है ? (الفتح الربانی، ص222)

या'नी जन्नत में भी जाना है और नेकियां न करूं, येह ख़याल न कर बल्कि उस की इबादत कर और उस की ना फ़रमानियों से ख़ुद को बचा।

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ मौत की तय्यारी

ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! अपनी उम्मीदों के चराग़ बुझा दे ! अपनी लालच की चादर को लपेट ! और दुन्या से रुख़्सत होने वाले की सी नमाज़ पढ़ा कर। याद रख ! मोमिन के लिये येह मुनासिब नहीं है कि वोह इस ह़ाल में सोए कि उस की लिखी हुई वसिय्यत उस के सिरहाने न रखी हो (गोया वोह अपनी हर रात को आख़िरी रात समझे)।

ऐ बन्दे ! तेरा खाना पीना, अहलो इ़याल (या'नी बाल बच्चों) में रहना सहना और अपने दोस्त अह़बाब से मिलना जुलना एक रुख़्सत होने वाले शख़्स की त़रह़ होना चाहिये, इस लिये कि वोह शख़्स कि जिस की ज़िन्दगी की डोर और तमाम इख़्तियारात दूसरे के क़ब्ज़े में हों तो उस को इसी त़रह़ दुन्या में रहना चाहिये। (الفتح الربانی، ص220 ملخصًا)

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ नफ़्सो शैतान की मुख़ालफ़त

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : नफ़्स बुराई का ही मश्वरा देता है, येह इस की फ़ित़रत (Nature) है। एक मुद्दत के बा'द येह इस्लाह़ पज़ीर होगा या'नी इसे सुधरने में वक़्त लगेगा। तुम पर लाज़िम है कि हर वक़्त नफ़्स से मुजाहदा (या'नी ख़ूब कोशिश) करते रहो। अपने नफ़्स से हमेशा कहते रहो कि तेरी नेक कमाई तुझे फ़ाएदा देगी और तेरी बुरी कमाई तेरे लिये वबाल साबित होगी। कोई दूसरा तेरे साथ न तो अ़मल करेगा और न ही अपने आ'माल में से कुछ देगा। नेक आ'माल करते रहना, नफ़्स से मुजाहदा करना बेह़द ज़रूरी है। तेरा दोस्त वोही है जो तुझे बुराई से रोके और तेरा दुश्मन वोही है जो तुझे गुमराह करे। जब तक नफ़्स गन्दगियों और बुरी ख़्वाहिशों से पाक न होगा, इसे **अल्लाह** करीम की बारगाह की नज़्दीकी कैसे ह़ासिल हो सकती है ? अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों और उम्मीदों को ख़त्म कर दे, जभी तेरा नफ़्स तेरा मुत़ीओ फ़रमां बरदार होगा। (الفتح الربانی، ص139، 140 ماخوذاً)

नफ़्सो शैतां ग़ालिब आए लो ख़बर अब जल्द तर या रसूलल्लाह ! आ कर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे पीरो मुर्शिद, हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ के पुर असर बयानात ने लाखों

लोगों की ज़िन्दगियां बदल कर रख दीं, हज़ारहा ग़ैर मुस्लिम मेरे मुर्शिद के बयानात से मुतअस्सिर हो कर मुसल्मान हुए, ह़ज़रत सरकारे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने एक बयान में "ह़सद" से बचने के मुतअ़ल्लिक़ बड़े प्यारे अन्दाज़ से समझाया है मगर पहले येह सुन लीजिये कि ह़सद कहते किसे हैं !

ह़सद किसे कहते हैं ?

"फ़तावा रज़विय्या शरीफ़" जिल्द 24 सफ़ह़ा 428 पर ह़सद की ता'रीफ़ (Deffination) यूं बयान की गई है : "किसी की ने'मत के छिन जाने की आरज़ू करना ।" (ردالمحتار، 1/66) या'नी किसी के पास कोई ने'मत हो वोह चली जाए, छिन जाए, लुट जाए इस की तमन्ना, आरज़ू करना "ह़सद" है जिसे इंग्लिश में जेलेसी (Jealousy) कहते हैं। मसलन किसी की शोहरत या इ़ज़्ज़त से नफ़रत का जज़्बा रखते हुए ख़्वाहिश करना कि येह किसी त़रह़ ज़लील हो जाए और इस की शोहरत या इ़ज़्ज़त जाती रहे इसी त़रह़ किसी मालदार से जल कर येह तमन्ना करना कि इस का माली नुक़्सान हो जाए और येह ग़रीब हो जाए। इस त़रह़ की तमन्ना करना ह़सद है।

(बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 10 माख़ूज़न)

ह़सद की बा'ज़ सूरतें

ह़सद की बहुत सूरतें हैं : मसलन किसी की अच्छी आवाज़ के बारे में येह तमन्ना करना कि इस का गला बैठ जाए या इस की आवाज़ इस से छिन जाए, किसी ज़हीन त़ालिबे इ़ल्म के बारे में येह ख़्वाहिश हो कि इस का ह़ाफ़िज़ा ख़राब (Damage) हो जाए, किसी त़ाक़त वर से जलना कि येह कमज़ोर पड़ जाए, येह सब ह़सद की मिसालें हैं अलबत्ता अगर वोह त़ाक़त

वर नाह़क़ ज़ुल्म करता है अब इस के लिये तमन्ना करना कि इस की त़ाक़त चली जाए येह ह़सद नहीं है। ह़सद ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

शैत़ान का घर बरबाद करने वाली बीमारी

मेरे मुर्शिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! अपने आप को ह़सद से बचाओ क्यूं कि येह बहुत बुरा दोस्त है। ह़सद ही वोह बुरी आ़दत है जिस ने शैत़ान को बरबाद कर के उसे हलाक कर दिया और उसे **अल्लाह** पाक की रह़मत से दूर कर के जहन्नमी बनाया, ह़सद ही ने शैत़ान को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की नज़र में ला'नत वाला बनाया। कोई अ़क़्लमन्द कैसे ह़सद कर सकता है ? क्या उस ने सुना नहीं कि **अल्लाह** पाक कुरआने करीम के पारह 5 **सूरतुन्निसाअ**, आयत नम्बर 54 में कुछ यूं इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اَمْ یَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ﴾ **तरजमा :** बल्कि येह लोगों से उस चीज़ पर ह़सद करते हैं जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़त़ा फ़रमाई है। (جِلاءُ الخواطر، ص3)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़ाहिर है सब को **अल्लाह** पाक ही अ़त़ा करता है। ह़सद करने वाला बन्दा ज़रा सोचे कि **अल्लाह** पाक की अ़त़ा की हुई ने'मत से जलने से **अल्लाह** पाक की तक़्सीम पर नाराज़ होना है।

नेकियों को खाने वाली चीज़

मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रत ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मजीद ह़दीसे पाक बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

फ़रमाया : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग सूखी लकड़ी को खा जाती है।" (ابوداؤد، 4/360، حدیث:4903)

अल्लाह पाक पर ए'तिराज़ ?

शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ बेटे ! उ़लमाए रब्बानिय्यीन (या'नी बा अ़मल उ़लमा) ने ह़सद के बारे में कितनी इन्साफ़ भरी बात की है कि ह़सद अपने दोस्त से शुरूअ़ होता है और ह़सद करने वाले अपने दोस्त ही को मारते हैं। ह़सद करने वाला नादान शख़्स مَعَاذَاللہ ! **अल्लाह** पाक के कामों, उस की पैदा की हुई चीज़ों और उस की तक़्सीम पर **अल्लाह** पाक से झगड़ता है (गोया वोह कहता है : **अल्लाह** पाक ने फ़ुलां ने'मत फ़ुलां को क्यूं दी ? **अल्लाह** पाक ने फ़ुलां को इतना ख़ूब सूरत क्यूं बनाया ? **अल्लाह** पाक ने उस को इतना मालदार क्यूं किया ? वग़ैरा) । (جلاء الخواطر، ص3) **अल्लाह** पाक हमें ह़सद से महफ़ूज़ फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ह़सद, वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबतो तोहमत मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 332)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक की ने'मत का दुश्मन

मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ बन्दए मोमिन ! मैं तुझे अपने पड़ोसी के खाने, पीने, पहनने, शादी, मकान और मालो दौलत वग़ैरा की ने'मतें जो **अल्लाह** पाक ने उसे अ़त़ा फ़रमाई हैं उन पर ह़सद करते क्यूं देखता हूं ? येह **अल्लाह** पाक की तक़्सीम है, क्या तू नहीं जानता कि ह़सद तेरे ईमान को कमज़ोर कर देगा और

तुझे तेरे रब की निगाहे रह़मत से गिरा देगा और **अल्लाह** पाक तुझ पर ग़ज़बनाक होगा। क्या तू ने येह ह़दीसे क़ुदसी नहीं सुनी ? जिस में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : اَلْحَاسِدُ عَدُوٌّ لِنِعْمَتِیْ **तरजमा :** ह़सद करने वाला मेरी ने'मत का दुश्मन है। (حلیۃ الاولیاء، 10/1234، رقم:15080) ह़दीसे क़ुदसी उस ह़दीसे पाक को कहते हैं जिस में फ़रमान **अल्लाह** पाक का हो और अल्फ़ाज़ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हों। (تیسیر مصطلح الحدیث، ص108)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह़लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस बयान में पड़ोसी की मिसाल देने की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पड़ोसी को इस लिये ख़ास कर के बयान फ़रमाया है कि अक्सर इन्सान अपने पड़ोसी से इन चीज़ों में बढ़ने की कोशिश करता है।

(शर्ह़े फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 305, 307 मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

वासिता ग़ौसो रज़ा का दूर हो

हर बुरी ख़स्लत ऐ नानाए ह़ुसैन

(वसाइले बख़्शिश, स. 257)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नादान शख़्स

मेरे पीरो मुर्शिद, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ मिस्कीन बन्दे ! तू किस चीज़ पर ह़सद करता है, क्या उस (या'नी ने'मत दिये गए शख़्स) के ह़िस्से पर या अपनी क़िस्मत पर ? अगर तू उस की क़िस्मत पर ह़सद करता है जो **अल्लाह** पाक ने उसे अ़त़ा फ़रमाई है जैसा कि पारह 25 **सूरतुज़्ज़ुख़्रुफ़** की आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है :

﴿نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا﴾ "**तरजमा :** दुन्या की ज़िन्दगी में उन के दरमियान उन की रोज़ी (भी) हम ने ही तक़्सीम की है।" तो यक़ीनन तू ह़द से बढ़ा, तुझ से ज़ियादा नादान और कौन होगा ? और अगर तू उस ने'मत दिये जाने वाले शख़्स पर अपने ह़िस्से की वज्ह से ह़सद करता है तो फिर तू बहुत बड़ा बे इ़ल्म है क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने तेरा ह़िस्सा तेरे इ़लावा किसी और को नहीं दिया और न तेरा ह़िस्सा उस की त़रफ़ जाएगा। या'नी जिस को जो दिया है उस के पास जाएगा तेरा ह़िस्सा नहीं जाता फिर तू क्यूं उस से जलता है, जो **अल्लाह** पाक ने उस को दिया है क्यूं इस पर ए'तिराज़ करता है ? (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 103 मफ़्हूमन व मुलख़्ख़सन)

ऐ़शो आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने वाले का क़ियामत में ह़ाल

ऐ नादान और कम इ़ल्म शख़्स ! अ़न्क़रीब तुझे पता चल जाएगा कि कल क़ियामत के दिन इन ने'मतों की वज्ह से तेरे पड़ोसी का ह़िसाब कितना लम्बा होगा और अगर उस ने **अल्लाह** पाक की इन अ़त़ा की हुई ने'मतों की वज्ह से **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी न की और **अल्लाह** पाक का ह़क़ (या'नी ज़कात व सदक़ाते वाजिबा वग़ैरा) अदा न किया कि उस के हुक्म पर अ़मल करता और इन बहुत ज़ियादा ने'मतों की वज्ह से **अल्लाह** पाक से उस की इ़बादत और फ़रमां बरदारी पर उस की मदद मांगता। यहां तक कि वोह क़ियामत के दिन तमन्ना करेगा कि उसे इन ने'मतों में से एक ज़र्रा भी अ़त़ा न किया जाता (चूंकि मालदार ने उस माल के हुक़ूक़े वाजिबा अदा न किये अब पछताएगा कि उसे इन ने'मतों से एक ज़र्रा भी अ़त़ा न किया जाता) और न वोह कभी किसी ने'मत को देखता। क्या तू ने ह़दीसे पाक न सुनी कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब मुसीबत वालों

को सवाब दिया जाएगा तो आराम व सुकून वाले तमन्ना करेंगे, काश ! दुन्या में इन की खालें क़ैंचियों से काट दी गई होतीं।

(ترمذی، 4/180، حدیث:2410, फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 102, 103 मुलख़्ख़सन)

बरोज़े क़ियामत ने'मत वाले की तमन्ना

मेरे पीरो मुर्शिद, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ने'मतों में पला बढ़ा) तेरा पड़ोसी कल क़ियामत के 50 हज़ार सालह दिन में सूरज की सख़्त धूप में अपना लम्बा हिसाब देने के लिये खड़ा होगा, उस वक़्त वोह तेरे दुन्या के (छोटे) मकान की तमन्ना करेगा क्यूं कि उस ने दुन्या की ने'मतों से फ़ाएदा उठाया और तू उस दिन **अल्लाह** करीम की रह़मत और उस की इनायत से सब्रो क़नाअ़त की ने'मत के सबब उस से अलग अ़र्श के साए में खाता पीता, ने'मतें पाता ख़ुश होगा।

(शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 306)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमें **अल्लाह** पाक की तक़्सीम पर राज़ी रहना चाहिये। ग़रीब सब्र करता है तो मालदार से ज़ियादा फ़ज़ीलत पा लेता है कि वोह मालदार से 500 साल पहले जन्नत में चला जाएगा और मालदार हिसाबो किताब में फंसा रहेगा। जब कि ग़रीब के पास माल नहीं था तो वोह माल के हिसाब से बचा रहेगा मगर ग़रीब हो साबिर या'नी सब्र करने वाला। अगर ग़रीब मालदारों से चिड़ता रहे और दुन्या का माल न मिलने पर दिल जलाता रहे तो फिर उस को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं होगी।

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! **अल्लाह** पाक के लिखे और उस के फ़ैसले पर राज़ी रह जो उस ने तुझे ग़रीब और दूसरे को मालदार किया। (ऐ बीमार !) तुझे बीमार किया और दूसरे को सिह़्ह़त मन्द किया। (ऐ परेशान ह़ाल !) तुझे

परेशानी में सख़्ती में और दूसरे को आसानी में रखा, तेरा इन सारे कामों में सब्र करना अ़र्श के नीचे ह़ासिल होने वाली ने'मतों का ज़रीआ़ बनेगा। **अल्लाह** पाक हमें और तुम्हें उन लोगों में से बनाए जो मुसीबत व परेशानी में **अल्लाह** पाक की अ़त़ा की हुई ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करते हैं और अपने सब काम **अल्लाह** पाक के ह़वाले करते हैं। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 103 मुलख़्ख़सन)

पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** आयत नम्बर 44 में है : ﴿وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ﴾ "**तरजमा :** और मैं अपने काम **अल्लाह** को सोंपता हूं, बेशक **अल्लाह** बन्दों को देखता है।" ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस के तह़्त फ़रमाते हैं : येह दुआ़ हर मुसीबत और दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त पढ़नी चाहिये बहुत मुफ़ीद है। कभी कोई मुसीबत आ जाए या कोई दुश्मन गले पड़ जाए तो याद आने पर येह दुआ़ पढ़नी चाहिये, اِنْ شَآءَالله इस की बरकतें नसीब होंगी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 24, अल मुअमिन, तह़्तल आयह : 44, स. 753)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

अपने दिल का है उन्हीं से आराम सोंपे हैं अपने उन्हीं को सब काम
लौ लगी है कि अब इस दर के ग़ुलाम चारए दर्दे रज़ा करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 114)

बिरादरे आ'ला ह़ज़रत, शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान ह़सन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

हमारी बिगड़ी बनी उन के इख़्तियार में है सिपुर्द उन्हीं के हैं सब कारोबार हम भी हैं

(ज़ौक़े ना'त, स. 188)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ग़ौसे आ'ज़म की दुन्या से बे रग़बती

मेरे पीरो मुर्शिद, ग़ौसुल आ'ज़म सय्यिदुना मुह़युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में मुल्के नीमरोज़ के वाली, सन्जर के बादशाह ने ख़त़ भेजा कि मैं मुल्क का कुछ अ़लाक़ा बत़ौरे जायदाद आप की ख़िदमत में नज़्र करना चाहता हूं ताकि आप भी मेरी त़रह़ ऐ़शो आराम की ज़िन्दगी गुज़ारें। बादशाहों के बादशाह, मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस के जवाब में फ़ारसी ज़बान में चार अश्आ़र पर मुश्तमिल एक रुबाई लिखी, जिस का तरजमा येह है :

सन्जर के बादशाह के काले रंग के ताज की त़रह़ मेरी क़िस्मत काली हो जाए अगर मेरे दिल में मुल्के सन्जर की कुछ भी हवस हो, इस लिये कि मुझे दौलते नीम शब (या'नी आधी रात के वक़्त उठ कर काएनात के ख़ालिक़ व मालिक की बारगाह में इ़बादत) की सल्त़नत ह़ासिल है, सल्त़नते नीमरोज़ की क़ीमत मेरी नज़र में जव के दाने के बराबर भी नहीं। (اخبار الاخیار، ص204 ملخصاً)

हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब   आ़शिक़े मुस्त़फ़ा बना या रब
ह़िर्स़े दुन्या निकाल दे दिल से   बस रहूं त़ालिबे रिज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

शहद नुमा ज़हर

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या की रौनक़ें और आसाइशें धोका देने वाली हैं। जिस ने इन्हें पाया धोका खाया और ग़ाफ़िल हुवा। जब तू दुन्या को उस की बुराइयों के साथ दुन्यादारों के हाथों

में देखे तो उस से ऐसे दूर हो जा जैसे किसी को क़ज़ाए ह़ाजत (वॉशरूम) करते हुए देखे तो बदबू से नाक बन्द कर लेता है ऐसे ही तू इस से भी अपनी नाक को बन्द कर ले, जैसे तू उस शख़्स की त़रफ़ देखने से बचता है ऐसे ही इस को भी देखने से बच। **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन चीज़ों की त़रफ़ ब नज़रे ख़्वाहिश व आरज़ू देखने से भी मन्अ़ फ़रमाया है। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 76 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह** पाक पारह 16 **सूरए त़ाहा**, आयत नम्बर 131 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ فِیْهِ ؕ وَ رِزْقُ رَبِّكَ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾

तरजमा : और ऐ सुनने वाले ! हम ने मख़्लूक़ के मुख़्तलिफ़ गुरौहों को दुन्या की ज़िन्दगी की जो तरो ताज़गी फ़ाएदा उठाने के लिये दी है ताकि हम उन्हें इस बारे में आज़्माएं तो उस की त़रफ़ तू अपनी आंखें न फैला और तेरे रब का रिज़्क़ सब से अच्छा और सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाला है।

दुन्या को तू क्या जाने येह बिस की गांठ है ह़र्राफ़ा सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है

शह्द दिखाए ज़ह्र पिलाए, क़ातिल, डाइन, शौहर कुश

इस मुर्दार पे क्या ललचाया दुन्या देखी भाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 186)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुन्या के मक्रो फ़रेब बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! तू दुन्या को क्या जानता है ? शक्लो सूरत से सीधी सादी नज़र आने वाली येह दुन्या "ज़ह्र की पुड़िया" है, येह धोकेबाज़ औ़रत की त़रह़ है, येह ऐसी ज़ालिमा है कि ज़ह्र को शह्द बना कर दिखाती है और जो इस से मह़ब्बत करता है

येह अपने आ़शिक़ को ही मार देती है, येह दुन्या बड़ी ख़राब और मुर्दार है, इस के साथ दिल लगाने का कोई फ़ाएदा नहीं, येह आज़्माई हुई बात है।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या, चन्द लम्हों का ख़्वाब है दुन्या
फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से, नहीं अच्छी ख़राब है दुन्या

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दुन्या सुकून व राह़त का मक़ाम नहीं

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग, अहले बैते अत़्हार के चश्मो चराग़, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स ऐसी चीज़ की ख़्वाहिश करे जो पैदा ही न हुई हो वोह अपने आप को थकाने वाला शख़्स है। आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : हुज़ूर वोह क्या चीज़ है ? आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : दुन्या में आरामो सुकून मांगना।

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने लिये एक उसूल बना लिया है जिस की वज्ह से मैं ख़ुश हूं और वोह उसूल येह है कि दुन्या फ़ितना व मुसीबत की जगह है और इस में जो भी ग़म व मुसीबत पहुंचती है येह इसी (ग़म व मुसीबत) की जगह है।

ह़ज़रते अबू तुराब नख़्शबी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : लोग दुन्या में दो चीज़ें मांगते हैं मगर उन्हें ह़ासिल नहीं कर पाते और वोह दो चीज़ें सुकून और ख़ुशी हैं और इन का वुजूद जन्नत ही में है। (शर्ह़े फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 167 माख़ूज़न)

इस जहां में हर त़रफ़ हैं मुश्किलें हर जगह हैं आफ़तें ही आफ़तें
कुछ घिरे ग़म में तो कुछ बीमार हैं तो कई क़र्ज़ें के ज़ेरे बार हैं

हैं बहुत कम लोग दुन्या में सुखी अक्सर अफ़राद इस जहां में हैं दुखी
मत लगा तू दिल यहां पछताएगा किस त़रह़ जन्नत में भाई जाएगा ?
लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले
दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर
अश्क मत दुन्या के ग़म में तू बहा हां नबी के ग़म में ख़ूब आंसू बहा

(वसाइले बख़्शिश, स. 709, 710 मुल्तक़त़न)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

क़नाअ़त की तरग़ीब

मेरे पीरो मुर्शिद हु़ज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : थोड़े रिज़्क़ पर ख़ुश रह और इस को लाज़िम पकड़ ले यहां तक कि तेरा वक़्त पूरा हो और फिर तुझे इस से बेहतर की त़रफ़ लौटाया जाए और तू जान ले कि न मांगने से तेरा ह़िस्सा ख़त्म न होगा और जो ह़िस्सा तेरा नहीं वोह ह़िर्स के सबब मांगने से तुझे नहीं मिलेगा, जिस ह़ाल पर **अल्लाह** पाक ने तुझे रखा है उसी में ख़ुश रह और **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रह । (फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 62, 63 मुलख़्ख़सन)

भलाई के दरवाज़े को ग़नीमत जानो

नानाए ग़ौसे आ'ज़म, रसूले अकरम صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस के लिये भलाई का दरवाज़ा खोला जाए तो उसे चाहिये कि इसे ग़नीमत जाने क्यूं कि वोह नहीं जानता कि कब दरवाज़ा बन्द हो जाए ।

(الزھد لابن المبارک، ص38، حدیث:117)

मेरे मुर्शिद हु़ज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : (ऐ लोगो !) जब तक ज़िन्दगी का दरवाज़ा खुला हुवा है उस को

ग़नीमत जानो क्यूं कि अ़न्क़रीब येह दरवाज़ा बन्द होने वाला है, जितनी नेकियां कर सकते हो करो और तौबा के दरवाज़े को भी ग़नीमत जानो और उस में दाख़िल हो जाओ या'नी तौबा कर लो। नेक लोगों के इज्तिमाआ़त को भी ग़नीमत जानो। (الفتح الربانی، ص29)

सोने वाले रब को राज़ी कर के सो क्या ख़बर उठे न उठे सुब्ह़ को

ख़िदमत करो, ख़िदमत की जाएगी

मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ लोगो !) **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी करो, तुम्हारी इत़ाअ़त की जाएगी, **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहो, तक़्दीर के फ़ैसले के आगे सर झुका लो, येह तुम्हारे सामने झुक जाएंगे और ख़ादिम बन जाएंगे। क्या तुम ने नहीं सुना कि जैसा करोगे वैसा भरोगे। **अल्लाह** पाक अपने बन्दों पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता बल्कि **अल्लाह** पाक कम अ़मल पर बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है। जब तू **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करेगा तो मख़्लूक़ में मख़्दूम (या'नी जिस की ख़िदमत की जाए) बना दिया जाएगा। (الفتح الربانی، ص44ملخصًا) शायद ऐसे ही मौक़अ़ के लिये डॉक्टर इक़्बाल ने कहा है :

ख़ुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़्दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से ख़ुद पूछे बता तेरी रिज़ा क्या है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुआएं मांगें

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे पीरो मुर्शिद, शहन्शाहे बग़्दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वलिय्ये कामिल बल्कि वलियों के इमाम और सरदारे औलिया हैं। मेरे पीरो मुर्शिद ग़ौसे

आ'ज़म अपने वक़्त के मुफ़्तिये आ'ज़म और ज़बर दस्त वाइ़ज़ो मुबल्लिग़ (या'नी बयान करने वाले) बेहतरीन नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) थे। क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में आप के बयानात ऐसे पुर असर होते कि लोगों की तक़्दीरें बदल जातीं, कितने लोग ईमान ले आते और गुनहगार तौबा कर के नेकी का रास्ता लेते, आप का सत्तर सत्तर हज़ार का इज्तिमाअ़ होता और लोग तवज्जोह से बयान सुनते थे। मेरे पीरो मुर्शिद ने दुआ़ के तअ़ल्लुक़ से भी प्यारे प्यारे मदनी फूल इर्शाद फ़रमाए हैं चुनान्चे

दुआ़ ज़रूर मांगें

शहन्शाहे बग़्दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) यूं मत कह कि मैं **अल्लाह** पाक से दुआ़ नहीं करूंगा, अगर मेरी क़िस्मत में होगा तो मिल जाएगा चाहे मैं मांगूं या न मांगूं, बल्कि दुन्या व आख़िरत में तुझे जिस जिस ख़ैरो भलाई की ज़रूरत है **अल्लाह** पाक की बारगाह में उस के तअ़ल्लुक़ से सुवाल कर सिवाए ना जाइज़ व गुनाहों भरी दुआ़ के, क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने दुआ़ मांगने का हुक्म क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया है जैसा कि पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** आयत नम्बर 60 में इर्शाद होता है : ﴿ اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ ﴾ **तरजमा :** "मुझ से दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूंगा।" और पारह 5 **सूरतुन्निसाअ**, आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है : ﴿ وَ سْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ ﴾ **तरजमा :** "और **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो।" (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 154 मुलख़्ख़सन)

है तेरा फ़रमां اُدْعُوْنِیْ है येह दुआ़ हो क़ब्र न सूनी
जल्वए यार से इस को बसाना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 122)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़दीसे पाक में दुआ़ की तरग़ीब

अल्लाह करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ मांगा करो। (ترمذی، 5/292، حدیث:3490)

शैख़े मुह़क़्क़िक़, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुआ़ ऐसी होनी चाहिये कि उस की क़बूलिय्यत में शको शुबा न हो बल्कि यक़ीन हो क्यूं कि यक़ीन के साथ दुआ़ करना क़बूल होने का असर रखता है। (शर्ह़े फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 462 मुलख़्ख़सन) तज़ब्ज़ुब के साथ नहीं कि देखूं दुआ़ क़बूल होती है या नहीं, बल्कि जब भी दुआ़ मांगें तो इस यक़ीन से मांगा करें कि **अल्लाह** पाक क़बूल करेगा।

दुआ़ मांगने का फ़ाएदा

मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान!) बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ न करो कि मैं **अल्लाह** पाक से दुआ़ करता हूं और वोह क़बूल नहीं फ़रमाता बल्कि (क़बूल होने, न होने के ख़याल को दिल से निकाल कर) हमेशा **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ मांगते रहो क्यूं कि जो तू ने मांगा है अगर वोह तेरी क़िस्मत में होगा तो वोह तेरी दुआ़ के बा'द तेरी त़रफ़ चला दिया जाएगा और इस त़रह़ तेरे यक़ीन को और मज़बूत़ करेगा और अगर तेरी दुआ़ में मांगी हुई चीज़ तेरी क़िस्मत में न हुई तो तुझ से उस का ध्यान हटा देगा और अगर तुझ पर किसी का क़र्ज़ हुवा (और तू ने दुआ़ की) तो **अल्लाह** पाक क़र्ज़ वापस लेने वाले के दिल को तेरी त़रफ़ से फेर देगा कि वोह तुझे अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ या कम कर दे या येह कि वोह सख़्त लहजे में क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने

के बजाए नरमी या देर और आसानी से वापस देने का मुत़ालबा करेगा यहां तक कि तुझे आसानी हो जाए और अगर वोह दुन्या में तेरा क़र्ज़ मुआ़फ़ या कम न भी करे तो **अल्लाह** पाक तेरी उस दुआ़ जिस का असर दुन्या में ज़ाहिर न हुवा तुझे क़ियामत में उस के बदले अ़ज़ीमुश्शान सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा क्यूं कि वोह बड़े करम वाला, ग़नी और रह़्म फ़रमाने वाला है। उस की पाक बारगाह में जो कोई भी दुआ़ मांगता है, **अल्लाह** करीम उसे ख़ाली हाथ नहीं लौटाता लिहाज़ा तेरी दुआ़ का दुन्या या आख़िरत में तेरे लिये कोई न कोई फ़ाएदा ज़रूर है। (शर्ह़े फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 460, 461 मुलख़्ख़सन) या'नी दुआ़ राएगां (या'नी ज़ाएअ़) नहीं होती, दुआ़ के फ़ाएदे ज़रूर ह़ासिल होते हैं।

मैं हूं बन्दा तू है मौला तू है क़ादिर मैं नाकारा
मैं मंगता तू देने वाला या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 122)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुआ़ के बदले क़ियामत में नेकियां

एक रिवायत में है : मुसल्मान क़ियामत के दिन अपने नामए आ'माल में ऐसी नेकियां देखेगा जो उस ने दुन्या में न की होंगी और न उन के बारे में जानता होगा तो उसे कहा जाएगा : येह तेरी उस दुआ़ का सवाब है जो तू ने दुन्या में मांगी थी। (फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 155)

क़बूलिय्यते दुआ़ में देर होने पर

ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **इर्शाद फ़रमाते हैं :** ऐ बन्दए ख़ुदा ! तू दुआ़ की क़बूलिय्यत में देर होने की वज्ह से अपने रब्बे करीम से नाराज़

होता है, तू कहता है कि **अल्लाह** पाक ने लोगों से मांगना मन्अ़ फ़रमाया और अपनी बारगाह में दुआ़ करना लाज़िम फ़रमाया है और मैं उस की बारगाह में दुआ़ मांगता हूं तो मेरी दुआ़ क़बूल नहीं होती, तू ऐसा न कह। ऐ नादान इन्सान ! तुझे कहा जाए कि तू आज़ाद है या ग़ुलाम (या'नी **अल्लाह** पाक के अह़कामात का पाबन्द है या इन से आज़ाद) ? अगर तू कहे कि मैं आज़ाद हूं तो तू काफ़िर है (क्यूं कि तू ने **अल्लाह** पाक के अह़कामात से बेज़ारी का इज़्हार किया है) और अगर तू कहे कि मैं ग़ुलाम बन्दा (या'नी पाबन्द) हूं तो फिर तुझे कहा जाएगा कि दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न होने या उस में देर होने की वज्ह से अपने ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** पाक पर इल्ज़ाम लगाता है कि वोह मेरी दुआ़ सुनता नहीं है, अगर तू येह ख़याल न करता और दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न होने को **अल्लाह** पाक की ह़िक्मतो मस्लह़त जानता तो तुझ पर **अल्लाह** पाक का शुक्र करना लाज़िम है क्यूं कि उस ने तेरे लिये दुआ़ में मांगी गई चीज़ से बेहतर चीज़, ने'मत (या'नी आख़िरत में सवाब) का इरादा फ़रमाया है। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 151 ता 152)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक मेरी दुआ़ नहीं सुनता या क़बूल नहीं करता वग़ैरा न कहा जाए बल्कि बन्दा सोचे कि **अल्लाह** पाक ने मुझे कितने अह़कामात दिये हैं कि फ़ुलां काम कर और फ़ुलां काम मत कर, मैं **अल्लाह** पाक की कितनी बात मानता हूं ? किस हुक्म पर अ़मल करता हूं ? समझाने के लिये मिसाल दे रहा हूं या'नी हम उस की बात न मानें और वोह हमारी बात पूरी न करे तो हम उस से शिक्वा शिकायत करें कि वोह मेरी बात नहीं सुनता। **अल्लाह** पाक समीअ़ व बसीर है या'नी सुनता और देखता है, उस ने वा'दा किया है कि ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

(پ24، المؤمن:60) **तरजमा :** "मुझ से दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूंगा।" अलबत्ता क़बूलिय्यते दुआ़ की कुछ सूरतें ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इर्शादात की रोशनी में ऊपर बयान हुईं। वरना क़बूलिय्यते दुआ़ का सवाब क़ियामत के दिन के लिये ज़ख़ीरा होगा जो फ़िलह़ाल हम पर ज़ाहिर नहीं है, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم क़ियामत में देखेंगे।

अल्लाह पाक से क्या दुआ़ करनी चाहिये ?

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक से अपने पिछले गुनाहों की मुआ़फ़ी, आइन्दा गुनाहों से बचने, अच्छी त़रह़ से उस की इबादत करने, अच्छी मौत और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक बन्दों से मुलाक़ात की दुआ़एं मांगा कर, येह कितने नेक बन्दें हैं। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 154) या'नी मैं क़ियामत के दिन इन के साथ उठूं, मेरी इन से मुलाक़ात हो और मुझे इन की बरकतें मिलें, येह दुआ़ भी मांगा करें।

मैं गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं बद से बदतर हूं बिगड़ा हुवा हूं
अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
हो करम अज़ तुफ़ैले मदीना मैं न हरगिज़ फिरूं कर के तौबा
अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
मक्रे शैत़ान से तू बचाना साथ ईमां के मुझ को उठाना
नज़्अ़ में दीदे बदरुदुजा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म विलायत अपनी रह़मत से फ़रमा इनायत
अपनी, अपने नबी की विला की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 126,127,128 मुल्तक़त़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मक्तबतुल मदीना की किताब ''फ़ज़ाइले दुआ़''

दुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सारी अहम मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये वालिदे आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब ''अह़सनुल विआ़ लि आदाबिद्दुआ़'' जिस का उर्दू तरजमा ''फ़ज़ाइले दुआ़'' के नाम से मक्तबतुल मदीना ने प्रिन्ट किया है इस का मुत़ालआ़ कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप की मा'लूमात में बहुत ज़ियादा इज़ाफ़ा होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आख़िरत अस्ल है और दुन्या इस का नफ़्अ़

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हर कारोबार (Business) करने वाला अपने रासुल माल (या'नी अस्ल सरमाए, Capital) को इस्ति'माल (Invest) कर के मनाफ़ेअ़ (Profit) कमाता है, क्या आप ने कभी ऐसा शख़्स देखा है जो अपने अस्ल माल (Capital) की ह़िफ़ाज़त न करे बल्कि फ़क़त नफ़्अ़ पर ही ख़ुश होता रहे ? कोई भी समझदार आदमी ऐसा नहीं करता बल्कि सब की नज़र केपीटल पर होती है कि इस में कमी नहीं होनी चाहिये कि अगर अस्ल माल ख़त्म हो गया तो नफ़्अ़ कहां से आएगा ? क्यूं कि नफ़्अ़ अस्ल माल ही की वज्ह से ह़ासिल हो रहा है।

अब ज़रा ग़ौर से पढ़ें कि ''एक मुसलमान का रासुल माल (या'नी अस्ल सरमाया) और नफ़्अ़ क्या होना चाहिये'' इस के मुतअ़ल्लिक़ मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ शख़्स !) अपनी आख़िरत को अस्ल माल और दुन्या को उस का नफ़्अ़ बनाना कि आख़िरत केपीटल (रासुल माल) है और

दुन्या नफ़्अ़ है। पहले आख़िरत को ह़ासिल करने के लिये अपना वक़्त ख़र्च कर फिर अगर कुछ वक़्त बचे तो अपनी दुन्या में ज़रीअ़ए मआ़श (वग़ैरा) की त़लब में ख़र्च कर। अपनी दुन्या को अस्ल माल और आख़िरत को इस का नफ़्अ़ न बना वोह इस त़रह़ कि अगर कुछ वक़्त मिले तो आख़िरत के लिये ख़र्च करे कि ख़ामी व कोताही के साथ जल्दी जल्दी पांचों नमाज़ें अदा करे या दुन्या कमा कर थकन हो जाए और तू नमाज़ अदा करने की बजाए मुर्दे की त़रह़ रात में सोया रहे। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 290 मुलख़्ख़सन)

سُبۡحٰنَ اللہ ! मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने बहुत अच्छा समझाया है, मौलाना रूमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

ज़िन्दगी आमद बराए बन्दगी ज़िन्दगी बे बन्दगी शरमिन्दगी

''या'नी हमें ज़िन्दगी मिली ही रब्बे करीम की इ़बादत व बन्दगी के लिये है।'' क़ुरआने करीम से इस शे'र की ताईद होती है : ﴿ وَمَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ ﴾ (پ 27، الذّٰریٰت:56) **तरजमा :** और मैं ने जिन्न और आदमी इसी लिये बनाए कि मेरी इ़बादत करें।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी मालो दौलत जम्अ़ करने के लिये नहीं मिली, बल्कि ज़िन्दगी इ़बादत के लिये मिली है, अगर इ़बादत के बिग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारी तो क़ियामत में शरमिन्दगी होगी, फिर कुछ हाथ नहीं आएगा। जिस ने दुन्या को रासुल माल बनाया तो उस का रासुल माल दुन्या में ख़त्म हो गया। जब कि ह़क़ीक़त में आख़िरत केपीटल (या'नी अस्ल सरमाया) थी, केपीटल बचाना भूल गए।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ हमें नसीह़त करते हुए फ़रमाते हैं :

दिन लहव में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया, फ़रमाने ह़क़ टाला किया शुक्रे करम तर्से सज़ा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 111)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुन्यावी कामों में फंसे दुन्यादार को चोट करते हुए फ़रमाते हैं : ऐ नादान ! तू ख़ुदाए रह़मान की इ़बादत से मुंह मोड़ कर सारा दिन खेलकूद में गुज़ारता है और रात में भी यादे ख़ुदा नहीं करता बल्कि सुब्ह़ तक बिस्तर पर सोया पड़ा रहता है, तुझे अपने प्यारे नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत के दिन मुंह दिखाने से शर्म नहीं आती और क्या तू **अल्लाह** पाक से भी नहीं डरता ? तू **अल्लाह** पाक का अ़त़ा किया हुवा रिज़्क़ खाता है और फिर भी उस की फ़रमां बरदारी नहीं करता, **अल्लाह** पाक के तुझ पर इतने एह़सानात हैं तू इन एह़सानात के शुक्र में **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी की त़रफ़ क्यूं नहीं आता और न उस के अ़ज़ाब से डरता है न इत़ाअ़त की त़रफ़ आता है न अ़ज़ाब से डरता है ? तू कैसा नादान, ग़ाफ़िल और नाशुक्रा है।

वसाइले बख़्शिश में है :

बेवफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार
काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 711, 712)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नेकी के रास्ते पर लग जा

मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐ नादान शख़्स ! तुझे हुक्म दिया गया है कि तू ख़ुद को सलामती के रास्ते पर चला और सलामती के रास्ते आख़िरत और **अल्लाह** पाक की इ़बादत के रास्ते हैं, तू ने नफ़्सो शैत़ान की ख़्वाहिशात पर अ़मल किया तो तुझ से दुन्या व आख़िरत की भलाई फ़ौत हो गई फिर तू क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा नेकियों के मुआ़मले में ग़रीब होगा, आख़िरत को अपना अस्ल माल बना ले तो तू दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा उठाएगा । **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक आख़िरत की निय्यत पर दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की निय्यत पर आख़िरत अ़त़ा फ़रमाने से इन्कार कर देता है । (الزھد لابن مبارک، ص193، حدیث:549)

येह जहां तेरे लिये और तू ख़ुदा के वासित़े

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपनी किसी नाज़िल की हुई किताब में फ़रमाया : ऐ इब्ने आदम (या'नी ऐ आदमी) ! मैं **अल्लाह** हूं, मेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, मैं किसी चीज़ को "कुन" (या'नी हो जा) फ़रमाता हूं तो वोह हो जाती है, तू मेरी फ़रमां बरदारी कर, मैं तुझे ऐसा कर दूंगा कि तू कहेगा : "हो जा" तो वोह शै हो जाएगी । और फ़रमाया : ऐ दुन्या ! जो मेरी इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करे तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उस को रन्जो मुसीबत में रख । (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 44 मुलख़्ख़सन)

जानवर पैदा हुए तेरी वफ़ा के वासित़े चांद सूरज और सितारे तेरी ज़िया के वासित़े
खेतियां सर सब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वासित़े सब जहां तेरे लिये है और तू ख़ुदा के वासित़े

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रह़मते इलाही का पड़ोस

ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तू दुन्या से बे रग़बत हो कर **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करेगा तो तू **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों और मह़ब्बत करने वालों में से होगा और तुझे जन्नत और **अल्लाह** पाक की रह़मत का पड़ोस नसीब होगा, दुन्या तेरी ख़िदमत करेगी और **अल्लाह** पाक तुझे तेरा जितना दुन्या का ह़िस्सा है पूरा पूरा अ़त़ा फ़रमाएगा इस लिये कि हर चीज़ अपने पैदा करने वाले के इख़्तियार में है और अगर तू आख़िरत से मुंह फेरते हुए दुन्या में मश्ग़ूल हुवा तो **अल्लाह** पाक तुझ से नाराज़ होगा, दुन्या तेरी ना फ़रमानी करेगी और तेरा जितना ह़िस्सा दुन्या में है दुन्या तुझ तक पहुंचाने में तुझे सख़्ती में डालेगी क्यूं कि वोह **अल्लाह** पाक की मिल्क और ख़ादिमा है और जो **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार हो येह उस की इ़ज़्ज़त करती है।

(फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 96 ता 97 मुलख़्ख़सन)

दुन्या व आख़िरत की मिसाल

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : दुन्या व आख़िरत की मिसाल मशरिक़ व मग़रिब जैसी है, तू इन में से किसी एक से जितना क़रीब होगा दूसरी से उतना ही दूर हो जाएगा या इन की मिसाल दो सोकनों जैसी है, तू इन में से किसी एक को ख़ुश करेगा तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी। (میزان العمل للغزالی، ص46) किसी की दो बीवियां हों तो दोनों बीवियां एक दूसरे की सोकन कहलाती हैं।

दुन्या वाला या आख़िरत वाला

अल्लाह करीम क़ुरआने अ़ज़ीम के पारह नम्बर 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 152 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ﴾ **तरजमा :** तुम में कोई दुन्या का त़लब गार है और तुम में कोई आख़िरत का त़लब गार है।

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कहा जाता है : "दुन्या वाले और आख़िरत वाले", तू देख कि तू किन में से है ? और दुन्या में रहते हुए किस गुरौह से होने को ना पसन्द करता है फिर जब तू आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा तो एक गुरौह जन्नत में और एक जहन्नम में होगा, एक गुरौह ह़िसाब के लम्बा होने की वज्ह से 50 हज़ार साल के उस एक दिन मैदाने क़ियामत में खड़ा होगा क्यूं कि क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल का है, एक गुरौह अ़र्श के साए में उस दस्तर ख़्वान पर होगा जिस पर अच्छे अच्छे खाने, फल और बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद शह्द होगा, वोह अपने ठिकानों की त़रफ़ देखता होगा ह़त्ता कि मख़्लूक़ जब ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ होगी येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और अपने घरों की त़रफ़ जाएंगे। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 97, शर्ह़ फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 291 मुलख़्ख़सन)

अब देख ले ! तू किस में है ? दुन्या वालों में या आख़िरत वालों में। **अल्लाह** करीम हमें आख़िरत वालों में कर दे। याद रहे कि आख़िरत वाला होने का येह मत़लब नहीं कि बन्दा मां बाप को घर से निकाल दे, बीवी बच्चों को रुख़्सत कर दे बल्कि मत़लब येह है कि इन के साथ रहते हुए आख़िरत को पेशे नज़र रख कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारनी है। तिजारत (बिज़्नेस), नोकरी (जॉब) करे मगर नमाज़ें और दीगर इबादात भी करता रहे और हर गुनाह से ख़ुद को बचाता रहे, दुन्या में रहते हुए शरीअ़त की पाबन्दी करे, सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो ऐसा शख़्स आख़िरत वाला है। सिर्फ़ दुन्या कमाने का ख़याल हो कि

www.dawateislami.net

सूद व रिश्वत, चोरी और डकैती, धोकेबाज़ी वग़ैरा, अल ग़रज़ जिस भी ह़राम ज़रीए़ से आता है तो बस आने दो, येह ख़राब दुन्या वाला है।

दुन्या की जाइज़ मह़ब्बत जिस में ह़लाल माल जम्अ़ करना हो, गुनाह का काम नहीं है लेकिन इस की पज़ीराई नहीं है क्यूं कि येह माल के जाल में फंसता जा रहा है, हो सकता है कि येह माल उस को घसीट कर ग़फ़्लत में ले जाए, इबादत और नेकियों से दूर करे। बारहा ऐसा होता भी है। मज़ीद येह कि ह़लाल माल पर क़ियामत का ह़िसाब बड़ा कड़ा (या'नी सख़्त) होगा कि कहां से ह़ासिल किया, किस त़रह़ ह़ासिल किया, कहां कहां ख़र्च किया ? येह जवाब देना आसान नहीं है और ह़राम माल पर सज़ा है।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त, स. 18)

दुन्या आख़िरत की खेती है

इन्सान क़ियामत के दिन भलाई और बुराई को याद करेगा, जो दुन्या में कर चुका है तो वहां उस वक़्त शर्मिन्दगी कुछ फ़ाएदा नहीं देगी, मौत से पहले मौत को याद करने में बेशक फ़ाएदा है, फ़स्ल काटते वक़्त, फ़स्ल और बीज को याद करना फ़ाएदे मन्द नहीं, जैसा कि ह़दीसे पाक है : ''اَلدُّنْيَا مَزْرَعَةُ الْآخِرَة'' या'नी दुन्या आख़िरत की खेती है। लिहाज़ा यहां जैसा बोएंगे वैसा आख़िरत में काटेंगे। जो शख़्स यहां अच्छी फ़स्ल लगाएगा या'नी भलाई के काम करेगा नेकियां करेगा वोही क़ाबिले रश्क होगा और जो बुराई करेगा आख़िरत में शरमिन्दगी उठाएगा कि नेकियां करने वाला भलाई की फ़स्ल काटेगा उसे अच्छा सिला मिलेगा और जो बुरी फ़स्लें (बुराइयां) बोएगा तो वोह आख़िरत में अ़ज़ाबों की फ़स्लें काटेगा। और जब मौत तेरे सामने हो उस वक़्त तू बेदार हुवा तो क्या फ़ाएदा ? (الفتح الربانی، ص30 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे मरने वाले के बारे में हमारे यहां कहा जाता है कि उस ने आंख बन्द कर ली, ह़क़ीक़त येह है कि आंख बन्द नहीं होती बल्कि मरने से आंख खुलती है, मरने के बा'द इन्सान के साथ जो हो रहा होता है वोह सब देखता है, मगर कुछ कर नहीं सकता।

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ास कर नौ जवानों को उभारते हुए अपनी जवानी में अपने आप को कह रहे हैं :

रियाज़त के येही दिन हैं बुढ़ापे में कहां हिम्मत

जो कुछ करना है अब कर लो अभी नूरी जवां तुम हो

(सामाने बख़्शिश, स. 159)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जैसी शान वैसी आज़्माइश

सय्यिदी व मुर्शिदी हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक अपने बन्दए मोमिन को हमेशा उस की कुव्वते ईमानी के मुत़ाबिक़ आज़्माता है तो जिस का ईमान ज़ियादा मज़बूत़ हो तो उस पर आज़्माइश भी बड़ी होती है। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اِنَّا مَعَاشِرُ الْاَنْبِيَاءِ اَشَدُّ النَّاسِ بَلَاءً" या'नी हम गुरौहे अम्बिया की आज़्माइश तमाम लोगों से ज़ियादा सख़्त होती है।" (الحديث المختارہ، 3/246، حديث:1053) **अल्लाह** पाक सादाते किराम को हमेशा आज़्माइश में रखता है ताकि वोह हर वक़्त हु़ज़ूरी में रहें और बेदारी से ग़ाफ़िल न हों ! क्यूं कि **अल्लाह** पाक इन से मह़ब्बत रखता है, वोह अहले मह़ब्बत और **अल्लाह** पाक के मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) हैं। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 61 मुलख़्ख़सन)

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस फ़रमान में ग़म के मारों, दुख्यारों, बे क़रारों के लिये बड़ी राह़त का सामान है, ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर आज़्माइशों और तक्लीफ़ों का आना गुनाहों की मुआ़फ़ी, बाइ़से तरक़्क़िये दरजात और नुज़ूले रह़मते रब्बुल इ़बाद का सबब भी हो सकता है। ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** पाक जब किसी क़ौम से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उन्हें आज़्माइशों में मुब्तला फ़रमा देता है।"

(مسند امام احمد،9/163،حدیث:23702ملتقطا)

हमें चाहिये कि हर मुआ़मले में राज़ी ब रिज़ाए मौला (या'नी **अल्लाह** पाक की रिज़ा में राज़ी) रहें। इसी में दोनों जहां की भलाई और बेहतरी है। एक और मक़ाम पर हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : इन्सान में कई गुनाह, ख़त़ाएं और जुर्म हैं और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गुनाहों से आलूदा होने वाला शख़्स **अल्लाह** पाक के क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) की सलाह़िय्यत नहीं रखता, जब तक गुनाहों की नजासत से पाक न हो जाए, जैसे बादशाहों के पास बैठने की सलाह़िय्यत उस को होती है जो नजासतों, बदबूओं और मैल कुचैल से पाक साफ़ हो, लिहाज़ा बलाएं और मुसीबतें वग़ैरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इन्हें मिटाने वाली हैं। जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक रात का बुख़ार एक साल का कफ़्फ़ारा है।"

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا،4/239،حدیث:50, फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 55 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बीमारियां गुनहगारों को गुनाहों से पाक और नेकों के दरजात बुलन्द करती

हैं, जब बुख़ार की मुद्दत, बन्दे की उ़म्र से ज़ियादा हो और तमाम गुनाहों को मिटा दे तो यक़ीनन बुख़ार की बक़िय्या मुद्दत उस बन्दे के दरजात में बुलन्दी का सबब बनेगी। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 177 मुलख़्ख़सन)

ज़बां पे शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"सब्र" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से मुसीबतों पर सब्र के तीन फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : "जब मैं अपने किसी बन्दे को उस के जिस्म, माल या औलाद के ज़रीए आज़्माइश में मुब्तला करूं, फिर वोह सब्रे जमील[1] के साथ उस का इस्तिक़्बाल करे तो क़ियामत के दिन मुझे ह़या आएगी कि उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आ'माल खोलूं।" (نوادر الاصول، ص700، حدیث:963)

﴾2﴿ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा मुसीबतें किन लोगों पर आईं ?" फ़रमाया : "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर, फिर इन के बा'द जो लोग बेहतर हैं, फिर उन के बा'द जो बेहतर हैं। बन्दे को उस की दीनदारी के ए'तिबार से मुसीबत में मुब्तला किया जाता है, अगर वोह दीन में सख़्त होता है तो उस की आज़्माइश भी सख़्त होती है और अगर वोह अपने दीन में कमज़ोर होता है तो **अल्लाह** पाक उस की दीनदारी के मुत़ाबिक़ उसे आज़्माता है। बन्दा मुसीबत में मुब्तला होता रहता है यहां तक कि दुन्या ही में उस के सारे गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (ابن ماجہ، 4/369، حدیث:4023)

---

1 ... सब्रे जमील या'नी सब से बेहतरीन सब्र येह है कि मुसीबत में मुब्तला शख़्स को कोई न पहचान सके, उस की परेशानी किसी पर ज़ाहिर न हो। (احیاء العلوم، 4/91)

﴾3﴿ सब्र भलाइयों के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/24، حدیث:16)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! शिक्वा न आ़शिक़ों की ज़बानों पे आ सके

(वसाइले बख़्शिश, स. 412)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهَا से मरवी है कि जब बन्दे के गुनाह बहुत ज़ियादा हो जाएं और उस के आ'माल ऐसे न हों जो उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन सकें तो **अल्लाह** पाक बन्दे को परेशानियों में मुब्तला फ़रमा देता है जो उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं। (قوت القلوب، 1/314)

तक्लीफ़ में हंस पड़ीं

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब फ़िरऔ़न को अपनी ज़ौजा ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के मुसल्मान होने का पता चला तो उस ने उन को तक्लीफ़ पहुंचाने का हुक्म दिया और उन के दोनों हाथों और पाउं में लोहे की मेख़ें ठोंक कर कोड़ों से सज़ा देना शुरूअ़ कर दी। ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने इस ह़ाल में अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया तो देखा कि जन्नत के दरवाज़े खुले हुए हैं और फ़िरिश्ते उन का जन्नत में मह़ल ता'मीर कर रहे हैं। ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के पास रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया : जन्नत में येह मह़ल आप का है। येह सुन कर ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا हंस पड़ीं तो उन से वोह

जिस्मानी तक्लीफ़ दूर हो गई और उन्हों ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर्दगार ! मेरे लिये अपने क़रीब जन्नत में महल तय्यार फ़रमा ।

क़ुरआने करीम में पारह 28 **सूरतुत्तहरीम**, आयत नम्बर 11 में इर्शाद होता है :

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾

तरजमा : और **अल्लाह** ने मुसल्मानों के लिये फ़िरऔ़न की बीवी को मिसाल बना दिया जब उस ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔ़न और उस के अ़मल से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात अ़ता फ़रमा ।

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) तू भी अपनी मुसीबत पर ऐसा सब्र करने वाला हो जा क्यूं कि जो कुछ **अल्लाह** पाक की ने'मतें जन्नत में हैं वोह तुझे तेरे दिल और यक़ीन की आंखों से नज़र आएंगी और जो यहां मुसीबतें, परेशानियां हैं तू उन पर सब्र करने वाला बन जाएगा । (الفتح الربانی، ص133)

सब्रो शुक्र कर

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ **अल्लाह** के बन्दे !) अगर तेरी क़िस्मत में ने'मत का मिलना है तो वोह तुझे ज़रूर मिल कर रहेगी, चाहे तू उस को त़लब करे या ना पसन्द करे ! और अगर तेरी क़िस्मत में मुसीबत व तक्लीफ़ है और तेरे लिये उस का फ़ैसला हो चुका है, तू ख़्वाह उसे ना पसन्द करे या उस से बचने की दुआ़ करे तब भी वोह मुसीबत तुझ पर आ कर रहेगी । अपने तमाम मुआ़मलात **अल्लाह**

पाक के ह़वाले कर दे, अगर तुझे ने'मतें अ़त़ा हों तो शुक्र अदा कर और अगर आज़्माइश का सामना हो तो सब्र कर। (قلائد الجواہر مع فتوح الغیب، ص24)

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मस्जिद और दुरूद शरीफ़

हमारे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ उम्मते मुह़म्मद ! **अल्लाह** पाक का शुक्र किया करो कि पहली उम्मतें जितना अ़मल करती थीं, **अल्लाह** पाक उन की निस्बत तुम से थोड़े अ़मल पर ही राज़ी हो जाता है। मस्जिद को लाज़िम पकड़ लो और नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो। (الفتح الربانی، ص23، 24ملتقطاً)

बचें बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे मह़बूब पर हर दम दुरूदे पाक हम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही

शव्वालुल मुकर्रम, 545 हिजरी, जुमुआ़ का दिन था, मेरे मुर्शिदे पाक हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने मद्रसे में मुसल्मान भाइयों की हमदर्दी के मौज़ूअ़ पर बयान किया, दौराने बयान मुर्शिद ने फ़रमाया : पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल में मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहने) का जज़्बा डाल दिया और मख़्लूक़ की

भलाई करना मेरी ज़िन्दगी का बड़ा मक़्सद बनाया। बेशक मैं तुम्हें नसीहत करने वाला हूं, मैं इस पर तुम से कोई जज़ा नहीं चाहता, मेरी ख़ुशी इसी में है कि तुम काम्याब हो जाओ ! अगर तुम बरबाद हुए तो मुझे ग़म होगा। (الفتح الربانی، ص41)

इन्तिहाई रह़्म दिली

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं तुम्हारी त़रफ़ सिर्फ़ सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये मुतवज्जेह होता या'नी तवज्जोह करता हूं, मेरे अन्दर तुम्हारे लिये ऐसी रह़्म दिली और शफ़्क़त है कि अगर हो सकता तो मैं तुम्हारी जगह तुम में से हर एक की क़ब्र में ख़ुद उतरता और तुम्हारी त़रफ़ से नकीरैन या'नी मुन्कर नकीर को जवाब भी ख़ुद ही देता ! (الفتح الربانی، ص318)

سُبْحٰنَ الله ! शफ़्क़त का कितना प्यारा अन्दाज़ है कि मेरे बस में होता, मैं तुम्हारी जगह क़ब्र में आ जाता, मुन्कर नकीर तुम से सुवाल करते और मैं जवाब दे देता।

अ़ज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को — तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का
निदा देगा मुनादी ह़श्र में यूं क़ादिरिय्यों को — कहां हैं क़ादिरी कर लें नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 98, 99)

अल्लाह पाक का सब से ज़ियादा प्यारा

मेरे पीरो मुर्शिद ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 11 जुमादल उख़्रा 545 हिजरी को अपने मद्रसे में दौराने बयान फ़रमाया : ऐ मालदारो ! अगर दुन्या व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो अपने माल के ज़रीए ग़रीबों से हमदर्दी करो ! फिर आप ने एक ह़दीसे पाक बयान

फ़रमाई : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोग **अल्लाह** पाक के इ़याल हैं, **अल्लाह** पाक का ज़ियादा प्यारा वोह है जो **अल्लाह** पाक के इ़याल को ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचाने वाला हो। (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/159، حدیث:24۔ الفتح الربانی، ص111)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मख़्लूक़ को **अल्लाह** पाक की इ़याल कहना मजाज़न है, ह़क़ीक़त नहीं है। चूं कि **अल्लाह** पाक बन्दों के रिज़्क़ का ज़ामिन व कफ़ील है तो मख़्लूक़ इ़याल की त़रह़ हो गई, ह़क़ीक़त में **अल्लाह** पाक औलाद, ख़ानदान से पाक है, तो इन मा'नों पर कि **अल्लाह** पाक उन का ज़ामिन व कफ़ील है, सब की रोज़ी अपने ज़िम्मए करम पर ली हुई है। इ़याल से मुराद येह है कि मख़्लूक़ **अल्लाह** पाक की मोह़ताज है जब कि **अल्लाह** पाक उन की ज़रूरिय्यात पूरी फ़रमाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अच्छे बरताव में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ हिदायत देना, ता'लीम देना, मेह़रबानी करना, रह़म करना, उन पर ख़र्च करना वग़ैरा दीनी व दुन्यावी भलाइयों में शामिल हैं। आक़ा को अपने बन्दों पर किसी का एह़सान करना अच्छा लगता है। इस ह़दीस में मख़्लूक़ की ज़रूरिय्यात पूरी करने और इ़ल्म, माल, इ़ज़्ज़त, जाइज़ सिफ़ारिश वग़ैरा जो आसान लगे उस के ज़रीए नफ़्अ़ पहुंचाने की फ़ज़ीलत मौजूद है। लोगों को नेकी की दा'वत देना, **अल्लाह** पाक के रास्ते की त़रफ़ बुलाना, इ़ल्मे दीन सिखाना, लोगों के साथ नरमी से पेश आना, लोगों पर रह़म करना, शफ़्क़त करना, इन पर माल ख़र्च करना, ग़रज़ (शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए) दीनी या दुन्यवी किसी मुआ़मले में लोगों के साथ नेकी करना, भलाई करना, येह सब कुछ लोगों को नफ़्अ़, फ़ाएदा पहुंचाने में शामिल है।

(فیض القدیر، 3/674، تحت الحدیث:4135 ملخصًا)

मुसल्मां मुसल्मान के ख़ूं का प्यासा हुवा वक़्त आया अ़जब या इलाही
सभी एक हो जाएं ईमान वाले पए शाहे आ़ली नसब या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 108)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर ह़ाल में शुक्र

मेरे मुर्शिदे पाक, शहन्शाहे बग़्दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मेरी वसिय्यत है कि **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से आने वाली आज़्माइश का किसी से भी ज़िक्र न कर, चाहे वोह तेरा दोस्त हो या दुश्मन, बल्कि उस का शुक्र अदा कर, कौन है कि जिस के पास **अल्लाह** पाक की कोई ने'मत न हो। तुम्हारे पास ऐसी कितनी ने'मतें हैं जिन का तुम्हें भी इ़ल्म नहीं, अगर तू आ़फ़ियत और अपने पास ने'मत मौजूद होने के बा वुजूद मज़ीद चाहिये इस लिये पहली वाली ने'मतों को जानते बूझते भुला कर या हलका समझ कर अपने रब से शिकायत करेगा तो वोह पहली मौजूद ने'मत को तुझ से दूर कर के तेरी इस शिकायत को दुरुस्त कर देगा और तेरी परेशानी को डबल कर देगा और तुझ से नाराज़ होगा लिहाज़ा तू शिकायत करने से बहुत ज़ियादा बच अगर्चे तेरा गोश्त क़ैंचियों से काट दिया जाए। (शर्ह़ें फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 170, 171 मुलख़्ख़सन)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का बयान है : एक मरतबा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बीमार थे, मैं इ़यादत को गया, ह़स्बे मुआ़वरा पूछा : हुज़ूर ! अब शिकायत का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : शिकायत किस से हो ? **अल्लाह** (पाक) से न तो शिकायत पहले थी न अब है, बन्दे को ख़ुदा से कैसी शिकायत ! (सदरुश्शरीअ़ह

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मैं ने ज़िन्दगी भर के लिये इस मुहावरे से तौबा कर ली। (फ़तावा अम्जदिय्या, 2/388)

हमारे यहां आ़म बोलचाल में शिकायत ही बोलते हैं। मुझे पेट के दर्द की शिकायत है, मुझे पीठ के दर्द की शिकायत है, तंगदस्ती की शिकायत है, सर के दर्द की शिकायत है। लफ़्ज़ शिकायत बोलने से पहले सोच लेना चाहिये कि येह दिया किस ने है ? तो क्या इस की शिकायत भी की जाती है ?

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने बड़े प्यारे अन्दाज़ में समझाया कि शिकायत मत करना। ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का एक क़ौल क़ुरआने करीम में है : ﴿وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۙ﴾ (پ19، الشعراء:80) **तरजमा :** और जब मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।

या'नी आदाब येह हैं कि बीमारी, मुसीबत, परेशानी अपनी त़रफ़ मन्सूब करे, यूं न कहे कि मुझे रब ने बीमार कर दिया बल्कि यूं कहे : जब मैं बीमार होता हूं तो वोह मुझे शिफ़ा देता है, शिफ़ा, सिह़्ह़त एक ने'मत है। बा'ज़ लोग यहां तक बोल देते हैं कि रब ने मुझे औलाद की ने'मत से मह़रूम रखा, येह बहुत सख़्त जुम्ला है, ज़रा ग़ौर करो कि तुम **अल्लाह** पाक की कितनी बातें मानते हो, कितनी फ़रमां बरदारी करते हो। बहर ह़ाल **अल्लाह** पाक की शिकायत न की जाए। अगर कोई येह जुम्ला बोले तो उस पर चढ़ाई नहीं करनी, कई लोग इस त़रह़ के जुम्ले बोल रहे होते हैं, مَعَاذَ الله बोलते वक़्त किसी की येह निय्यत नहीं होती कि वोह रब की शिकायत कर रहा है।

अहम बात : शिक्वा शिकायत एक लफ़्ज़ है। बा'ज़ सूरतों में रब पर शिक्वा होता है कि रब ने मेरे साथ ऐसा क्यूं किया ? अगर ए'तिराज़ पाया जाएगा तो बन्दा इस्लाम से ही निकल जाएगा लेकिन आ़म त़ौर पर जो

येह कहा जाता है कि बीमारी की शिकायत है इस पर कोई हुक्म न लगाया जाए। मैं ने भी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वाक़िए़ से जाना कि शिकायत का लफ़्ज़ नहीं बोलना।

दीनी किताबों के मुता़लए़ की तरग़ीब

हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे में एक रिसाले का ए'लान होता है, इस की पीडीएफ़ और बोलता रिसाला (Audio book) भी वायरल होता है। आप मक्तबतुल मदीना और उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुता़लआ़ करते रहें तो इस त़रह़ की मा'लूमात ह़ासिल होती रहेंगी। अब तो इ़ल्म ह़ासिल करना बहुत आसान हो गया है, मश्हूर है कि प्यासा कूंएं के पास जाता है लेकिन अब कूंवां घर घर पहुंच कर कह रहा है : आओ प्यासो ! प्यास बुझाओ। लेकिन हम लोग पढ़ने, सुनने के लिये तय्यार नहीं। आप येह पढ़ें, सुनें दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी اِنْ شَآءَالله।

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी हर क़दम पर मुआ़वनत फ़रमा
सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 75)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

सब से बड़ा मेह्रबान

सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान पर अक्सर मुसीबतें **अल्लाह** पाक की बारगाह में गिला शिक्वा करने के सबब ही नाज़िल होती हैं। ऐ नादान इन्सान ! तू किस मुंह से **अल्लाह** पाक से गिला शिक्वा करता है ह़ालां कि वोह सब से बढ़ कर रह़्म करने वाला, मेह्रबान है, वोह अपने बन्दों पर

बिल्कुल ज़ुल्म नहीं करता। क्या शफ़्क़तो मेहरबानी करने वाले वालिदैन पर इल्ज़ाम लगाया जा सकता है जब कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَللّٰهُ اَرْحَمُ بِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنَ الْوَالِدَةِ الشَّفِيْقَةِ بِوَلَدِهَا या'नी "**अल्लाह** पाक मां के बच्चे पर शफ़्क़त करने से ज़ियादा अपने बन्दे पर मेहरबान है।"

(بخاری، 4/100، حدیث:5999)

ऐ **अल्लाह** के बन्दे! तू बा अदब बन जा और मुसीबत के वक़्त सब्र कर और अगर तू सब्र न कर सके फिर भी सब्र कर और शरीअ़त के अह़कामात की पाबन्दी कर और रिज़ाए इलाही पर राज़ी रह, अपने आप को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से फेर कर अपनी ज़बान को शिक्वा शिकायत से रोक। जब तू येह सब कर लेगा और अगर तेरी क़िस्मत में ख़ैरो भलाई होगी तो **अल्लाह** पाक तेरी पाकीज़ा ज़िन्दगी और ख़ुशी में इज़ाफ़ा करेगा और अगर तक़्दीर (या'नी **अल्लाह** पाक ने जो कुछ तेरे लिये तै़ किया है उस) में तेरे लिये परेशानी होगी तो **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी की वज्ह से वोह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और तुझे अपनी रिज़ा पर राज़ी रखेगा यहां तक कि वोह परेशानी गुज़र जाए और हर आफ़त अपना वक़्त पूरा होने के बा'द चली ही जाती है जैसे रात के बा'द दिन आता है तो वोह अपनी रोशनी से रात के अंधेरे को ख़त्म कर देता है। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 54 ता 56 मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

दौलतें ऐसी ने'मतें इतनी बे ग़रज़ तू ने कीं अ़त़ा या रब
तू करीम और करीम भी ऐसा कि नहीं जिस का दूसरा या रब
तू ह़सन को उठा ह़सन कर के हो मअ़ल ख़ैर ख़ातिमा या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 85, 87)

या'नी **या अल्लाह** पाक! मेरा अच्छा ख़ातिमा हो, मुझे अच्छी मौत नसीब फ़रमा।

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का इर्शाद है : वक़्ते मर्ग क़रीब है या'नी मेरा दुन्या से जाने का वक़्त क़रीब है और अपनी ख़्वाहिश येही है कि मदीनए त़य्यिबा में ईमान के साथ मौत और बक़ीए़ मुबारक में ख़ैर के साथ दफ़्न नसीब हो और वोह क़ादिर है। (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, 3/461 मुल्तक़त़न) **अल्लाह** पाक हमें ख़ैर के साथ जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना नसीब फ़रमाए। आमीन

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर मुश्किल के बा'द आसानी है

मेरे मुर्शिदे करीम, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : अक्सर ऐसा होता है कि तू (परेशानी वग़ैरा की ह़ालत में) कहता है : मैं क्या करूं ? कहां जाऊं ? क्या ह़ल करूं ? तो जवाबन तुझे कहा जाता है : अपनी जगह पर ठहर और अपनी ह़द से आगे न बढ़ (या'नी बे सब्री न कर) यहां तक कि तेरे पास उस की त़रफ़ से कुशादगी आए जिस ने तुझे इस ह़ाल में साबित क़दम रहने का इर्शाद फ़रमाया। **अल्लाह** पाक पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 200 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اِصۡبِرُوۡا وَصَابِرُوۡا وَرَابِطُوۡا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰہَ﴾ **तरजमा :** "सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और इस्लामी सरह़द की निगह़बानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो।" इस आयत की तफ़्सीर में हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ऐ बन्दए मोमिन ! **अल्लाह** पाक ने तुझे सब्र का हुक्म दिया फिर सब्र में भी मुबालग़ा और इस पर मज़बूत़ी से जमे रहने का फ़रमाया और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से सब्र को छोड़ने से डरो क्यूं कि ख़ैरो सलामती सब्र में है। जैसा कि रिवायत में है : "सब्र ईमान में ऐसे है जैसे सर बदन में।" येह भी कहा गया है कि हर चीज़ का सवाब एक मिक़्दार और अन्दाज़े के साथ है सिवाए सब्र के, बेशक सब्र का सवाब बे ह़िसाब है। **अल्लाह** पाक पारह 23 **सूरतुज़्ज़ुमर**,

आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰ ﴾

तरजमा : सब्र करने वालों ही को उन का सवाब बे हिसाब भरपूर दिया जाएगा । (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 254, 255)

मेरे मुर्शिदे करीम, ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मजीद फ़रमाते हैं : ऐ बन्दे ! सब्र दुन्या व आख़िरत में हर ख़ैरो भलाई की अस्ल है और सब्र ही से मोमिन **अल्लाह** पाक की रिज़ा तक पहुंचता है । सब्र को छोड़ने से बच क्यूं कि बे सब्री से दुन्या व आख़िरत में तू शरमिन्दा होगा । (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 256 मुल्तक़तन)

रोना मुसीबत का तू मत रो आले नबी के दीवाने
कर्बो बला वाले शहज़ादों पर भी तू ने ध्यान किया ?

(वसाइले बख़्शिश, स. 197)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

भलाई की बुन्याद

ऐ बन्दे ! अगर तू चाहता है कि तू परहेज़ गार, **अल्लाह** पाक पर भरोसा करने वाला बन जाए तो सब्र को इख़्तियार कर क्यूं कि सब्र भलाई की बुन्याद है, जब सब्र के मुतअ़ल्लिक़ तेरी निय्यत दुरुस्त हो जाएगी और तू **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये सब्र करेगा तो तुझे इस सब्र का बदला येह मिलेगा कि तू दुन्या व आख़िरत में **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) ह़ासिल करने और महब्बत करने वालों में दाख़िल हो जाएगा । (الفتح الربانی، ص136)

मुसल्मां हूं अगर्चे बद हूं सच्चे दिल से करता हूं
तेरे हर हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अगले हफ़्ते का रिसाला